

सूरह तब्वत^[1]- 111

سُورَةُ تَبَّتْ

सूरह तब्वत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में (तब्वत) शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह तब्वत) है। जिस का अर्थ तबाह होना है।^[1]
- आयत 1 से 3 तक में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के शत्रु अबू लहब के बुरे परिणाम से सूचित किया गया है।
- आयत 4 और 5 में उस की पत्नी के शिक्षाप्रद परिणाम का दृश्य दिखाया गया है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बैर रखने में अपने पति के साथ थी।
- हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया कि आप अपने समीप के परिजनो को डरायें तो आप ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा। और जब सब आ गये, तो कहा: यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर सवेरे या संध्या को धावा बोल देगी तो तुम मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप को झूठ बोलते नहीं देखा। आप ने कहा: मैं तुम्हें अपने सामने की दुःखदायी

1 यह सूरह आरंभिक मक्की सूरतों में से है। इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह आदेश दिया गया कि आप समीप वर्ती संबंधियों को अल्लाह से डरायें, तो आप सफ़ा "पहाड़ी" पर गये, और पुकारा: "हाय भोर की आपदा!" यह सुन कर कुरैश के सभी परिवार जन एकत्र हो गये। तब आप ने कहा: यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने को तैयार है तो तुम मेरी बात मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप से झूठ नहीं आजमाया। आप ने फ़रमाया: मैं तुम्हें आग (नर्क) की बड़ी यातना से सावधान करता हूँ। इस पर किसी के कुछ बोलने से पहले आप के चचा "अबु लहब" ने कहा: तुम्हारा सत्यानास हो! क्या हमें इसी लिये एकत्र किया है?

और एक रिवायत यह भी है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिये पत्थर उठाया, इसी पर यह सूरह उतारी गई। (देखिये: सहीह बुख़ारी: 4971, और सहीह मुस्लिम: 208)

यातना से डरा रहा हूँ। इस पर अबु जहल ने कहा: तुम्हारा नाश हो! क्या इसी लिये हम को एकत्र किया है? इसी पर यह सूरह अवतरित हुई। (सहीह बुखारी: 4971)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अबु लहब के दोनों हाथ नाश हो गये,
और वह स्वयं भी नाश हो गया!^[1]
2. उस का धन तथा जो उस ने कमाया
उस के काम नहीं आया।
3. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में
जायेगा।^[2]
4. तथा उस की पत्नी भी, जो ईधन

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝

سَيَصْلَىٰ نَارًا إِذَا تَلَهَّبَ ۝

وَأَمْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝

- 1 अबु लहब का अर्थ: ज्वाला मुखी है। वह अति सुंदर और गोरा था। उस का नाम वास्तव में "अब्दुल उज्ज़ा" था, अर्थात: उज्ज़ा का भक्त और दास। "उज्ज़ा" उन की एक देवी का नाम था। परन्तु वह अबु लहब के नाम से जाना जाता था। इसलिये कुर्आन ने उस का यही नाम प्रयोग किया है और इस में उस के नर्क की ज्वाला में पड़ने का संकेत भी है।
- 2 (1-2) यह आयतें उस की इस्लाम को दवाने की योजना के विफल हो जाने की भविष्यवाणी हैं। और संसार ने देखा कि अभी इन आयतों के उतरे कुछ वर्ष ही हुये थे कि "बद्र" की लड़ाई में मक्के के बड़े बड़े वीर प्रमुख मारे गये। और "अबु लहब" को इस खबर से इतना दुख हुआ कि इस के सातवें दिन मर गया। और मरा भी ऐसे कि उसे मलगिनानत पुसतुले (प्लेग जैसा कोई रोग) की बीमारी लग गई। और छूत के भय से उसे अलग फेंक दिया गया। कोई उस के पास नहीं जाता था। मृत्यु के बाद भी तीन दिन तक उस का शव पड़ा रहा। और जब उस में गंध होने लगी तो उसे दूर से लकड़ी से एक गढ़े में डाल दिया गया। और ऊपर से मिट्टी और पत्थर डाल दिये गये। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। और जैसा कि आयत नं० 2 में कहा गया उस का धन और उस की कमाई उस के कुछ काम नहीं आई। उस की कमाई से उद्देश्य अधिकतर भाष्यकारों ने "उस की संतान" लिया है। जैसा कि सहीह हदीसों में आया है कि तुम्हारी संतान तुम्हारी उत्तम कमाई है।

लिये फिरती है।

5. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी।^[1]

فِي جَنْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ

- 1 (1-5) अबु लहब की पत्नी का नाम "अरबा" था। और उस की उपाधि (कुनियत) "उम्मे जमील" थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शत्रुता में किसी प्रकार कम न थी।

लकड़ी लादने का अर्थ भाष्य कारों ने अनेक किया है। परन्तु इस का अर्थ उस को अपमानित करना है। या पापों का बोझ लाद रखने के अर्थ में है।

वह सोने का हार पहनती थी और "लात" तथा "उज्ज़ा" की शपथ ले कर -यह दोनों उन की देवियों के नाम हैं- कहा करती थी कि मुहम्मद के विरोध में यह मूल्यवान हार भी बेच कर खर्च कर दूँगी। अतः यह कहा गया है कि आज तो वह एक धन्यवान व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य हार पड़ा हुआ है परन्तु आखिरत में वह ईंधन ढोने वाली लौंडी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदले बटी हुई मूँज की रस्सी पड़ी होगी। जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लौंडियों के गले में पड़ी होती है। और इस्लाम का यह चमत्कार ही तो है कि जिस "अबु लहब" और उस की पत्नी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शत्रुता की उन्हीं की औलाद: "उत्बा", "मुअत्तब", तथा "दुरह" ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।